विचार बिन्दु

सबसे अधिक ज्ञानी वही है जो अपनी कमियों को समझकर उनका सुधार कर सकता हो। –अज्ञात

कैसे बढ़े किताबों के प्रति रुचि!

अक्टोबर 2024 के पहले सप्ताह में हिंदी के एक नामी प्रकाशक ने राजस्थान की राजधानी जयपुर में चार दिवसीय किताब उत्सव का आयोजन किया। आयोजन में पुस्तक प्रदर्शनी और पुस्तकों पर चर्चाओं के सत्र आयोजित किए गए। यह उत्सव बहुत सफल रहा। चारों दिन किताबें देखने और खरीदने वालों की भीड़ रही और चर्चा सत्रों में भी न केवल अच्छी उपस्थिति रही, पाठकों की सहभागिता भी उत्साह बढ़ाने वाली रही। चर्चा है कि हिंदी का एक और बड़ा प्रकाशक निकट भविष्य में जयपुर में ऐसा ही आयोजन करने वाला है। इधर, जैसे-जैसे दिवाली नज़दीक आती जा रही है हिंदी के अनेक प्रकाशक साहित्य प्रेमियों से किताबें खरीदने का आग्रह करके किताबों के पक्ष में माहौल बना रहे हैं। वैसे इधर के कुछ अंतराल को छोड़ दें तो जयपुर में हर बरस पुस्तक मेले लगते रहे हैं और उनमें अच्छी ख़ासी भीड़ भी उमड़ती रही है। लेकिन उन पुस्तक मेलों के उद्देश्यों आदि को लेकर लोगों के मन में अनेक प्रकार के संशय भी रहे हैं। मसलन यह कि वहां साहित्यिक किताबें और स्तरीय किताबें बहुत कम होती हैं, वहां लोग किताबें देखने-खरीदने के मक़सद से कम और तफ़रीह के मक़सद से ज़्यादा आते हैं, वगैरह। एक हद तक यह बात सही भी है। लेकिन एक हद तक ही। उन मेलों में ख़ास तौर पर अंग्रेज़ी की किलो के हिसाब से बिकने वाली किताबों की बहुतायत होती है। लेकिन अगर इस बात के व्यावसायिक पक्ष को छोड़ दें तो यह भी एक यथार्थ है कि किताबों के उस बेतरतीब ढेर में बहुत सारी स्तरीय किताबें भी होती हैं और उनका मुद्रित से बहुत कम मूल्य पर मिल जाना मुझ जैसों को भी उनकी तरफ खींचता है। मेरा तो यह भी मानना है कि हमें किताब के हर खरीददार और पाठक का सम्मान करना चाहिए। पाठक भी विकसित होता है। आज जो पाठक कोई हल्की-फुल्की किताब खरीद और पढ़ रहा है, कल वही गम्भीर किताब भी खरीदेगा और पढ़ेगा। हममें से अधिकांश का विकास इसी तरह हुआ है। अगर अपनी बात कहूं तो मैंने बचपन/किशोरावस्था में कुशवाहा कांत, प्यारे लाल आवारा, गुलशन नंदा, कर्नल रंजीत वगैरह को खूब पढ़ा है। इस बात को स्वीकार करने में मुझे कोई संकोच नहीं है कि इन्हीं ने मुझमें पढ़ने की रुचि जगाई। लेकिन अब मेरी रुचि बदल चुकी है। इतनी ज़्यादा बदल चुकी है कि अब मैं मज़बूरी में भी इनमें से किसी को भी नहीं पढ़ सकता।

लेकिन इस बात को भी स्वीकार करना ही पड़ेगा कि इधर लोगों की पढ़ने की रुचि कम हुई है। हिंदी किताबों को पढ़ने की तो और भी ज़्यादा कम हुई है। अगर हम कारणों की पड़ताल करें तो बहुत सारी बातें सामने आती हैं। सुपरिचित साहित्यकार हेमंत शेष ने अपनी एक टीप में बहुत कम शब्दों में ये कारण गिना दिये हैं। वे लिखते हैं: यह एक विडंबना और तथ्य है कि आधुनिक जीवन ने जिन अच्छी परंपराओं और आदतों को क्षति पहुंचाई है उन में '**पढ़ने की आदत**' सबसे पहले घायल हुई है। बहुतेरे हैं इसके कारण: हमारी तथाकथित दैनिक-व्यस्तता, अच्छी पर सस्ती किताबों की अनुपलब्धता, पुस्तकालय और वाचनालयों की दुर्दशा, समाचार पत्रों द्वारा पठनीय किताबों की जानकारी समय पर न दे पाना, समीक्षा और आलोचना की संदिग्धता, घटिया साहित्य का बाजार पर एकाधिकार, मीडिया के अन्य साधनों का किताब पर अतिक्रमण, स्कूली स्तर पर किताबों के प्रति छात्रों में अनुराग न जगा पाने की दोषपूर्ण शिक्षा-संरचना, साहित्य के प्रति दिनों दिन घटती जनरुचि, पुस्तकों के बढ़ते हुए दाम, राजनीति अर्थशास्त्र क्रिकेट और सिनेमा का प्रतिदिन के जीवन में बढ़ता हुआ हस्तक्षेप, साहित्यिक पत्रकारिता के संकट। बहुत से कारण किताब न पढ़ पाने के मनोविज्ञान के लिए जिम्मेदार हैं!

मैं याद करता हूं तो पाता हूं कि जब हमारे देश में टेलीविज़न नया-नया आया था तो हम सब उससे चिपके रहते थे। हालत यह थी कि जिनका कृषि से कोई लेना-देना नहीं था वे भी कृषि दर्शन तक को नहीं छोड़ते थे। तब यह कहा जाता था कि इस मुए टेलीविज़न ने पढ़ने-लिखने के समय को हमसे छीन लिया है। आहिस्ता-आहिस्ता टेलीविज़न के प्रति हमारा आकर्षण कम हुआ। लेकिन इसी के साथ यह भी हुआ कि इण्टरनेट हमारी ज़िंदगी में आ गया और आ गया सोशल मीडिया। इन्होंने हमारे समय पर और अधिक क्रूर आक्रमण किया। इधर वॉट्सएप जैसी चीज़ों ने लोगों को पढ़ने की लत तो लगाई, लेकिन किताबों और अक्ल से दूर कर दिया। पढ़ना केवल मोबाइल के स्क्रीन तक सिमट कर रह गया। आप किसी से बात करें, वह वॉट्सएप को उद्धृत करता पाया जाएगा। हद दरज़े की मूर्खतापूर्ण, गैर ज़िम्मेदार, अप्रामाणिक अतार्किक, द्वेषपूर्ण, विभेदकारी, नफ़रत फैलाने वाली सामग्री वहां फैलाई जाती है और हममें से ज़्यादातर उसे बड़े उत्साह से लपक लेते हैं। जिन्हें ऐसा करने से लाभ होता है वे बहुत व्यवस्थित और प्रोफ़ेशनल तरीके से इस माध्यम का इस्तेमाल कर रहे हैं। राजनीतिक दलों ने बाकायदा अपने आईटी सेल बना रखे हैं जो थोक के भाव घृणा और विद्वेष भरी सामठी इस माध्यम पर बिखेर रहे हैं। लोगों के पास जितना समय है उसे वे इस कचरे का उपभोग व प्रसार करने में खपा रहे हैं। आप किसी को टोक दें तो वह लड़ने मरने को उतारू हो जाता है।

लेखकों को और कई मोर्चों पर सक्रिय होना होगा। उन्हें सोशल मीडिया पर किताबों के पक्ष में वातावरण तैयार करना होगा। ऐसा वे उम्दा किताबों की चर्चा करके कर सकते हैं। यह करने के लिए हमें हर सम्भव व उपलब्ध माध्यम का प्रयोग करना चाहिए। अगर चार लोग मिलते हैं तो उन्हें भी आपस में हाल में पढ़ी हुई अच्छी किताब की चर्चा करनी चाहिए।

अख़बारों और पत्रिकाओं में विचार और साहित्य की जगह लगातार घटते-घटते अब करीब-करीब अदृश्य हो गई है। किताबों की चर्चा होती थी तो लोग उन्हें पढ़ने को व्याकुल भी होते थे। अब चर्चा ही नहीं होती है। और जो थोड़ी बहुत होती है वह लिहाज़ और दोस्तियों की वजह से विश्वसनीय नहीं रह गई है। होता यह है कि हम अपने निजी रिश्तों की वजह से किसी किताब की अतिरंजित प्रशंसा कर देते हैं और उस प्रशंसा से प्रभावित होकर जब कोई उस किताब को खरीदता और पढ़ता है, और उसे वैसा नहीं पाता है जैसा उस समीक्षा में बताया गया था, तो वह स्वयं को छला हुआ महसूस करता है। हम एक पाठक को हमेशा के लिए खो देते हैं। यह दुर्घटना इधर बहुत हो रही है। बहुत सारे कारणों से हिंदी किताबें अंग्रेज़ी किताबों की तुलना में काफी महंगी होती है। गांवों और कस्बों की बात तो दूर, बड़े शहरों तक में किताबों की दुकानें बहुत कम हैं। हां, इधर ई कॉमर्स साइट्स की वजह से किताब खरीदने के इच्छुक लोगों को एक सुविधाजनक विकल्प मिल गया है, और मेरी जानकारी के अनुसार इन साइट्स पर किताबें खूब बिक रही हैं। बिक रही है, अर्थात पढ़ी भी जा रही हैं। तो कुल मिलाकर एक मिला-जुला परिदृश्य है।

लेकिन अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है, किया जा सकता है। मैंने अभी किताब उत्सव और किताबें खरीदने के अभियान की चर्चा की। अगर किताब उत्सव जैसी गतिविधियां शहरों के साथ-साथ छोटे कस्बों और गांवों में भी हों तो निश्चय ही और ज़्यादा लोग किताबों की तरफ आकर्षित होंगे। सच तो यह है कि बड़े शहरों की बजाय कस्बों और गांवों में ऐसे प्रयत्नों की ज़्यादा ज़रूरत है। और ये प्रयत्न तो करने ही होंगे। ये प्रयत्न प्रकाशक व लेखक मिल कर बहुत अच्छी तरह से कर सकते हैं। लेखकों को और कई मोर्चों पर सक्रिय होना होगा। उन्हें सोशल मीडिया पर किताबों के पक्ष में वातावरण तैयार करना होगा। ऐसा वे उम्दा किताबों की चर्चा करके कर सकते हैं। यह करने के लिए हमें हर सम्भव व उपलब्ध माध्यम का प्रयोग करना चाहिए। अगर चार लोग मिलते हैं तो उन्हें भी आपस में हाल में पढ़ी हुई अच्छी किताब की चर्चा करनी चाहिए। अगर आप पार्क में बैठकर गपशप कर रह हैं तो वहां भी किसी नई किताब के बारे में लोगों को बताएं। इसी तरह तो लोग किताबों से जुड़ेंगे। लेकिन ऐसा करते हुए हमें आत्म प्रचार व आत्म प्रशंसा का मोह त्यागना होगा। यह हमारी बड़ी कमी है कि हम अपने सिवा किसी को न तो देखते हैं और न मानते हैं। अगर आप केवल अपने लिखे की चर्चा करेंगे तो लोग आपसे किनारा करने लगेंगे। इसी के साथ यह भी कि जो उम्मीद हम दूसरों से करते हैं, कि वे किताबें खरीदेंगे, उस उम्मीद पर पहले खुद को भी खरा साबित करना होगा। अगर हम जीवन की अन्य बहुत सारी चीज़ों के लिए पैसे खर्च कर सकते हैं तो किताबों के लिए पैसा खर्च करने में कंजूसी क्यों? क्या हम अपने बजट का एक हिस्सा हर माह किताबों के लिए अलग नहीं रख सकते? हमारे घरों में किताब के लिए जगह न हो तो बनाई जानी चाहिए। इसका असर हमारे बच्चों पर भी पड़ेगा। अगर हमारा काम शैक्षिक संस्थानों से पड़ता है तो हमें इस बात का आठाह करना चाहिए कि वहां अच्छी और समृद्ध लाइब्रेरी हो। लाइब्रेरी की व्यवस्था हमें अपनी कॉलोनियों में भी करने के प्रयास करने होंगे।

ऊपर मैंने हेमंत शेष की जिस टीप की चर्चा की है, उसमें उन्होंने एक भयावह भविष्य के प्रति हमें आगाह किया है। वे लिखते हैं, "**भौतिक-सुविधाएं, संपन्नता और उपभोक्तावादी लालच जिस तरह हमारी दृष्टियों को ललचा रहे हैं और पुस्तकों के प्रति हमारे सम्मान-भाव में जिस तरह हर दिन कमी आती जा रही है उसे देखते हुए तो आने वाले पुस्तकविहीन समाज की कल्पना ही बहुत त्रासद और संकट सूचक है।**" जो चिंता हेमंत शेष की है, वह चिंता हम सबकी है और होनी चाहिए। केवल चिंता ही नहीं, इस स्थिति को बदलने के गम्भीर प्रयास भी हमको ही करने होंगे।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

दीपावली कार्तिक अमावस्या को ही

दीपावली मनाये जाने के पीछे धार्मिक, सामाजिक और वैज्ञानिक मान्यता

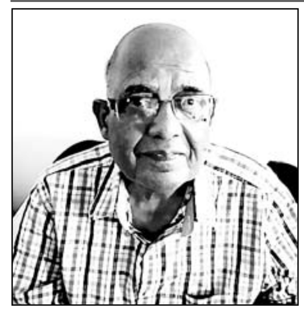

डॉ. जे.के. गर्ग

माना जाता है कि कार्तिक महीने की अमावस्या को देवताओं द्वारा समुद्र मंथन के समय देवी लक्ष्मी क्षीर सागर से ब्रह्माण्ड में अवतरित हुई थी। इसी वजह से कार्तिक महीने की अमावस्या को माता लक्ष्मी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में दिवाली के त्यौहार के रूप में मनाना शुरू किया था भगवान। कृष्ण ने कार्तिक महीने की चतुर्दशी को नरकासुर को मार कर समस्त महिलाओं को मुक्त करवा के उनकी जान बचाई थी इसलिए दीपावली से एक दिन पूर्व चतुर्दशी को इस घटना को उत्सव के रूप में मनाया जाता है।

महाभारत के अनुसार 12 वर्ष के निष्कासन एवं एक वर्ष के अज्ञातवास के बाद कार्तिक महीने की अमावस्या को पांडव राज्य में सकुशल लौटे थे। पांडवों के वापस लौटने से वहां के लोग बहुत खुश थे, उन्होंने मिट्टी के दीपक जलाकर और पटाखे जलाकर पांडवों के लौटने वाले दिन को मनाना शुरू कर दिया। बहुत समय पहले एक राक्षस था जिसने लड़ाई में सभी देवताओं को पराजित किया और सारी पृथ्वी और स्वर्ग को अपने अधिकार में ले लिया। तब माँ काली ने देवताओं, स्वर्ग और पृथ्वी को बचाने के उद्देश्य से देवी दुर्गा के मष्तिष्क से जन्म लिया था।

राक्षसों की हत्या के बाद उन्होंने अपना नियंत्रण खो दिया और जो भी उनके सामने आया उन्होंने हर किसी की हत्या करनी शुरू कर दी। भगवान शिव माता काली के चरणों में लेट गये जिससे उनका क्रोध शांत हुआ। बंगाल-उडीसा उस पल को यादगार बनाने के लिए उसी समय से ही दिवाली पर देवी काली की पूजा करके मनाया जाता है। सोने की लंका के स्वामी रावण का वध करने के बाद अयोध्या वापस लोटें तो वहां के नर-नारीयों ने समूचे राज्य को दीपों की रोशनी से जगमगा दिया और राम सीता लक्ष्मण के आगमन पर खुशी प्रकट करने हेतु आतिशबाजी कर पटाखे जलाये, तभी से भारत भूखंड में कार्तिक मास की अमावस्या को दिवाली मनाई जाती है। राजा विक्रमादित्य का राज्याभिषेक भी कार्तिक अमावस्या को हुआ था तबसे लोगों ने दिवाली को ऐतिहासिक पर्व के रुप से मनाना शुरु कर दिया था। बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध के अनुयायियों ने आज के लगभग 2500 वर्ष पूर्व गौतम बुद्ध के स्वागत में दीप जलाकर दीपावली मनाई थी। जैन धर्म को मानने वालों के मुताबिक कल्पसूत्र के अंदर बताया गया है कि महावीर के निर्वाण के साथ जो अंतरज्योति सदा के लिए बुझ गई है।

अमृतसर के स्वर्ण मंदिर की स्थापना भी वर्ष 1577 में दीवाली के मौके पर की गयी थी। तीसरे गुरु अमरदास जी ने दिवाली को लाल-पत्र दिन के पारंपरिक रुप में बदल दिया जिस पर सभी सिख अपने गुरुजनों का आशीर्वाद पाने के लिये एक साथ मिलते है। सिख धर्म में इस दिन को बंदी छोड़ दिवस के रुप में जाना जाता है।

महर्षि दयानंद ने वर्ष 1875 में आर्य समाज की स्थापना की थी। महान समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती ने कार्तिक मास की अमावस्या के दिन अजमेर में निर्वाण प्राप्त किया। उसी दिन से इस दिन को दिवाली के रूप में मनाया जा रहा है। मारवाड़ी कार्तिक की कृष्ण पक्ष के अंतिम दिन पर दिवाली पर अपने नए साल का उत्सव मनाते हैं एवं नये बही खाते प्रारम्भ करते हैं। गुजराती भी कार्तिक के महीने में शुक्ल पक्ष के पहले दिन दीवाली के एक दिन बाद अपने नए साल का उत्सव मनाते है। दिवाली शुरुआत में फसलों की कटाई के उत्सव के रुप में मनाई जाती थी। यह वह समय है जब भारत में किसान फसल काटकर संपत्ति और समृद्धि की देवी लक्ष्मी की पूजा करते हैं और उन्हें नई फसल में से उनका हिस्सा समर्पित करते हैं। दीपावली के दौरान आतिशबाजी करने और पटाखें जलाने पीछे वैज्ञानिक आधार है। इसका मुख्य उद्देश्य मौसम परिवर्तन से उत्पन्न कीट-कीड़े विशेषतया मच्छर से होने वाली जानलेवा खतरों का मुकाबला करना है, जो गीले से सर्दियों के मौसम में इन खतरनाक कीटों परजीवियों के लिए प्रजनन स्थल के रूप में काम करता है।

दीयों को जलाने और उनसे रोशनी करने के पीछे विज्ञान है। जब हम घी या तेल का दिया जलाते हैं तो तेल या घी में मौजूद फैटी एसिड जलते हैं। इस प्रक्रिया में फैटी एसिड का एक अणु जलने से 56 कार्बन के अणु निकलते हैं और 52 पानी के अणु निकलते हैं।

–डॉ. जे.के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा जयपुर

बालिकाएं भारत के भविष्य में समाज की पथ प्रदर्शक बनेगी : डिप्टी सीएम दीया कुमारी

डिप्टी सीएम दीया कुमारी ने छात्राओं को ट्रॉफी प्रदान की।

- **मेयो कॉलेज का 36वां वार्षिक समारोह संपन्न, डिप्टी सीएम दीया कुमारी ने विजेताओं को ट्रॉफी दी**
- **दीया कुमारी ने मेयो कॉलेज गर्ल्स स्कूल को बेस्ट रेजिडेंशियल स्कूल का खिताब मिलने पर बधाई दी**

अजमेर, (कासं)। अजमेर के मेयो कॉलेज गर्ल्स स्कूल में रविवार को 36वें वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह का सांस्कृति कार्यक्रमों के साथ आयोजन हुआ। समारोह में मुख्य अतिथि डिप्टी सीएम दीया कुमारी रही। उन्होंने वर्षभर पढ़ाई सहित विभिन्न गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली प्रतिभावान छात्राओं को ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित करते हुए हौंसला अफजाई की।

मेयो गर्ल्स कॉलेज में रविवार को आयोजित वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह में डिप्टी सीएम दीया कुमारी ने शिरकत की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि बालिकाएं देश के भविष्य को आकार देने वाली बनेगी। उन्होंने कहा कि छात्राएं भारत के भविष्य में समाज की पथ प्रदर्शक बनेगी। इनके द्वारा अपनी मेधा एवं नैतिकता के बल पर देश के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जाएगी। इनके द्वारा प्रदेश और देश का नाम रोशन किया जाएगा। दीया कुमारी ने कहा कि बेटियों ने देश का नाम रोशन किया है। मेयो कॉलेज गर्ल्स स्कूल को बेस्ट रेजिडेंशियल स्कूल का खिताब मिला है, इसके लिए सभी बधाई दी। समारोह में पेरिस ओलम्पियन 2024 दोहा (कतर) में आयोजित शॉटगन ओलिंपिक क्वालीफिकेशन चैम्पियनशिप में रजत पदक विजेता, इंडियन स्कीट शूटर 2014 बैच पूर्व छात्रा महेश्वरी चौहान और इंटरनेशनल शूटिंग स्पोर्ट फैडरेशन वर्ल्ड कप फाइनल-2024 में ट्रैप शूटिंग में रजत पदक विजेता 2022 नेशनल गेम्स में स्वर्ण पदक विजेता भारतीय निशानेबाज विवान कपूर ने भी शिरकत की।

समारोह में मेयो गर्ल्स को मेयो स्पिरिट के लिए जमीला सिंह ट्रॉफी, उत्कृष्ट सेवा और मदद के लिए एमसीजीएस ट्रॉफी, सर्वश्रेष्ठ सदन की ट्रॉफी, इंटर हाउस कम्युनिटी सर्विस कप, कम्प्यूटर साइंस में उत्कृष्ट योगदान, सर्वश्रेष्ठ आलराउंडर, एक्सीलेंस इन ड्रामेटिक्स, मानवीय कारणों से दूसरों को प्रेरित करने के लिए तथा सह पाठ्य गतिविधियों के लिए एमसीजीएस ट्रॉफी प्रदान की गई। स्कूल प्रधानाचार्या नीति भल्ला सैनी ने बताया कि 36वें वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह स्कूल के मुख्य भवन में जापानी कॉन्सेप्ट वाबी साबी थीम पर आधारित एक्जिबिशिन के साथ शुरू हुआ। जूनियर और मीडिल स्कूल की छात्राओं ने स्कूल सभागार में वैरायटी एंटरटेनमेंट प्रोग्राम का आयोजन किया, शाम को वार्षिक खेल दिवस के अंतर्गत एचएल दत्त पवीलियन में स्पोर्ट्स इवेंट्स हुए। प्रधानाचार्या सैनी ने बताया कि सवाई मानसिंह पोलो ग्राउंड में इक्वेस्ट्रियन मीट का आयोजन हुआ, जिसमें मेयो छात्राओं की ओर से हॉर्स राइडिंग शो (घुड़सवारी डिस्प्ले) में माउंटेड एस्कॉर्ट, फ्लैग होस्टिंग, स्टैंडिंग सैल्यूट, टेंट पेगिंग, क्रॉस टेंट पेगिंग, जिमखाना, शो जंपिंग, सिक्स बार, माउंटेड पीटी, म्यूजिकल राइड आदि विविध गतिविधियों का आयोजन हुआ तथा मुक्ताकाश मंच पर एमसीजीएस म्यूजिकल प्रोडक्शन द्वारा मेयो गर्ल्स के निर्देशन में मुख्य नाटक द साउंड ऑफ म्यूजिक की प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर मेयो कॉलेज गर्ल्स स्कूल समिति के अध्यक्ष वीपी सिंह बदनोर, बर्सर डॉ. चंद्रपालसिंह राठौड़, प्रधानाचार्य नीति भल्ला सैनी सहित गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

खेत में 12 फीट लंबा अजगर पकड़ा

40 किलो वजनी अजगर को देखने गांव की महिलाएं भी पहुंची।

अलवर, (निसं)। अलवर के राजगढ़-बांदीकुई सड़क मार्ग के मध्य स्थित गोठ गांव में एक खेत में करीब 12 फीट का अजगर मिला, जिसका वजन 40 किलो था। वनकर्मियों की टीम ने अजगर को रेस्क्यू कर जंगल में छोड़ा। गांव के काफी लोग मौके पर पहुंच गए। रेस्क्यू टीम के सदस्य जुगनू तम्बोली मौके पर पहुंचे।

जुगनू तम्बोली ने बताया कि ग्रामीणों ने सूचना दी की गोठ गांव में जीतू मीना के खेत मे अजगर हैं। करीब आधे घंटे में रेस्क्यू ऑपरेशन किया गया, जिसके बाद अजगर को रेस्क्यू कर देर रात्रि वन विभाग को सौंप दिया। उन्होंने बताया कि रेस्क्यू किये अजगर को राजगढ़-माचाडी सड़क मार्ग स्थित लवकुश वाटिका में छोड़ दिया। गांव में अजगर मिलने के बाद गांव की महिलाएं मौके पर पहुंच गई। अजगर रेस्क्यू करने वाली टीम ने महिलाओं को बुलाया। सभी महिलाओं ने अजगर को छूकर फोटो भी खिंचवाये।

चम्बल को प्रदूषित करने के मामले में तीन उद्योगों को नोटिस

जाजू के आग्रह पर एनजीटी ने उद्योगों को पक्षकार बनाया

भीलवाड़ा, (निसं)। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल सेन्ट्रल जोनल बैंच भोपाल के न्यायाधिपति शिवकुमार सिंह न्यायिक सदस्य एवं डॉ. ए. सेंथिल विशेषज्ञ सदस्य की बैंच ने पर्यावरणविद् बाबूलाल जाजू की अधिवक्ता दीक्षा चतुर्वेदी के मार्फत दायर जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए जाजू के निवेदन पर कोटा के 3 उद्योगों को प्रदूषण फैलने में आवश्यक पक्षकार मानते हुए विपक्षी पक्षकार कायम कर नोटिस जारी कर 9 जनवरी तक जवाब मांगा है।

एनजीटी ने मैसर्स डीसीएम श्रीरामनगर कोटा, मैसर्स श्रीराम रेयॉन्स श्रीराम नगर कोटा एवं मैसर्स कोटा सुपर थर्मल पावर स्टेशन सकतपुरा कोटा को विपक्षी पक्षकार कायम करने पर स्वीकृति प्रदान की है। याचिकाकर्ता जाजू ने याचिका में बताया कि नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल सेन्ट्रल जोनल बैच, भोपाल में निर्णित हो चुकी याचिका संख्या 318/2014 बाबूलाल जाजू बनाम राजस्थान राज्य व अन्य में नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल भोपाल बैंच ने गंदे नालों को देश की एकमात्र घड़ियाल सैंचुरी चम्बल में जाने से रोककर नालों के पानी को एसटीपी प्लांट लगाकर पानी को साफ करके ही चम्बल में छोड़े जाने के निर्देश दिये थे, जिस पर कोटा प्रशासन, स्थानीय निकायों और प्रदूषण नियंत्रण मंडल द्वारा एकमात्र एसटीपी प्लांट लगाया गया है, जो पूरी तरह से कार्य भी नहीं कर रहा है।

सरकार द्वारा सैकड़ों करोड़ रुपये खर्च करने के बावजूद लगभग 15 प्रतिशत पानी का शोधन ही हो रहा है बाकी सीधे नदी में जा रहा है, जिससे सड़ांध आ रही है। 10 वर्ष पूर्व दायर याचिका में पारित आदेशों की पालना कोटा प्रशासन नहीं कर पाया है जिसके चलते नदी में शहर के सैकड़ों छोटे-बड़े मलमूत्र वाले नाले चम्बल नदी में जा रहे हैं।

वहीं कुछ औद्योगिक इकाईयों द्वारा गर्म व प्रदूषित पानी चोरी छिपे सीधे चम्बल में छोड़ा जा रहा है। उल्लेखनीय है कि कुछ दिनों पूर्व जाजू द्वारा चंबल नदी का अवलोकन भी किया गया था।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 28 अक्टूबर, 2024

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र दिन 3:24 तक, ब्रह्म योग प्रातः 6:47 तक, बालव करण प्रातः 7:51 तक, चन्द्रमा रात्रि 10:11 से कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-कर्क, बुध-तुला, गुरू-वृष, शुक्र-वृश्चिक, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज एकादशी तिथि में वृद्धि हुई है। आज उन्मीलिनी महाद्वादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी व्रत और पूजा है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:01 तक, शुभ 9:24 से 10:47 तक, चर 1:34 से 2:57 तक, लाभ-अमृत 2:57 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:38, सूर्यास्त 5:43

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्य के लिए भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

कर्क
नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक मामलों में संयम रखना ठीक रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह
व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यावसायिक संबंध बनेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय बना रहेगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। परिवार में शुभ-धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में महत्वपूर्ण सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

मकर
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। परिवार में वाद-विवाद बढ़ सकते हैं।

कुंभ
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।